"बौद्ध-दर्शन की आचारनीति का वर्तमान परिपेक्ष्य में प्रासंगिकता"

सार संक्षेप (SYNOPSIS)

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर दरभंगा (बिहार)

(विश्वविद्यालय दर्शन शास्त्र विभाग)

के

मानविकी संकाय के दर्शनशास्त्र विषय

में

पी०-एच०-डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध का प्रारूप

पर्यवेक्षक

डॉ. राहुल मनहर

सहायक प्राध्यापक,दर्शनशास्त्र विभाग,

समस्तीपुर महाविद्यालय,समस्तीपुर

(ल. ना. मि. वि. की अंगीभूत इकाई)

Rahul manhar

शोधार्थी

बब्लु कुमार

ग्राम. + पोस्ट :- विनोदपुर

थाना-मुफ्फसिल,जिला -बेगूसराय (बिहार)

पिन - 851134, मोबाइल नं. -8877045745

Bablu Kumar

"बौद्ध-दर्शन की आचारनीति का वर्तमान परिपेक्ष्य में प्रासंगिकता"

परिचय :-

भारत भूमि संसार का प्रदर्शनागार,सब रत्नों की प्रसवित्री एवं प्रकृति का प्रियतम निकेतन है ! जिस समय पृथ्वी का अधिकांश देश असभ्य मनुष्यों से भरा था, उस समय भारत सभ्यता के उच्चतम चोटी पर विराजमान होकर अपने सौभाग्य से जगत को मुग्ध और पुल्कित करता था ! जिस समय सम्पूर्ण जगत अज्ञान के अन्धकार में समाया हुआ था, ज्ञान और सभ्यता का क्षीण आलोक भी यूरोप आदि महादेशों में प्रसृत नहीं होता था, उस समय भारत विद्या,ज्ञान व् सभ्यता के पूर्ण आलोक से जगत को आलोकित कर रहा था ! क्या धर्म,क्या विज्ञान,क्या दर्शन,क्या गणित,क्या ज्योतिष,क्या काव्य,क्या पुराण,क्या शिल्प,क्या वाणिज्य,क्या भाषा,क्या साहित्य, सभी विषयों में भारत संसार के शीर्ष पर आसीन था ! भारत वर्ष विभिन्न भाषा-भाषी,विभिन्न धर्मावलम्बी एवं विभिन्न जातीय लोगों की आवास भूमि रही है ! भारत भूमि पर आदि काल से ही महामनीषियों का आगमन होता रहा है जिन्होंने इस भूमि पर ज्ञान की सरिता को निर्वाध रूप से गतिमान रखा है ! भारत की दार्शनिक परंपरा अत्यंत प्राचीन और विशाल है ! हमारे महामनीषी केवल सामान्य घटनाओं का कारण ही नहीं ढूँढ़ते थे, बल्कि जीवन की मूल समस्याओं जैसे- सुख-दुःख,जीवन-मृत्यु तथा जगत का भी कारण ढूँढ़ते थे और इस तरह सत्य की खोज करते थे ! सत्य की खोज की उनकी इस जिज्ञासु प्रवृति ने ही भारत भूमि पर दर्शन के बीज बोए, जो कालांतर में विशाल वट-वृक्ष के रूप में परिणत हुआ ! निश्चय ही इस दर्शन-वृक्ष की छाया में आज भी जीवन यात्रा से थके हुए पथिक को शीतलता प्रदान करने का सामर्थ्य है !

भारतीय दर्शन दुःख की आधार-शिला पर प्रतिष्ठित है ! प्रायः सभी भारतीय दर्शन दुःख-निवृति के लिए ही उपायों के अन्वेषण में लगे हुए हैं ! यह एक निश्चित तथ्य है कि प्राणी संसार में त्रिविधात्मक दुखों से ग्रस्त है ! दर्शनों का यह लक्ष्य है कि किसी भी उपायों से उनके दुखों का निवारण करे एवं उन्हें सर्वोच्च सुख की प्राप्ति का मार्ग बतलाएँ ! दार्शनिक भाषा में सांसारिक दुखों को बंधन एवं उनकी निवृति को मोक्ष के नाम से पुकारते हैं ! यही बंधन और मोक्ष भारतीय दर्शनों का मुख्य प्रश्न रहा है ! भारतीय दर्शन रूपी वृक्ष में अनेक शाखाएँ प्रारंभिक काल से ही रही है ! सामान्यतया भारतीय दर्शन को आस्तिक एवं नास्तिक दो भागों में बाँटा जाता है ! वेद की प्रामाणिकता को स्वीकार करने वाला दर्शन आस्तिक या वैदिक दर्शन कहलाये तथा अस्वीकार करने वाले नास्तिक या अवैदिक (श्रमण) दर्शन कहलाये ! वेद एवं ईश्वर की सत्ता को न मानते हुए भी सर्वकल्याण की भावना से ओत-प्रोत बौद्ध-दर्शन का आविर्भाव भारत भूमि पर ईसा की छठी शताब्दी पूर्व हुआ ! बौद्ध-दर्शन के संस्थापक महात्मा बुद्ध हैं ! इनका जन्म हिमालय की तराई में स्थित कपिलवस्तु नमक स्थान के राजवंश में हुआ था ! जिस समय भगवन बुद्ध का लोक में जन्म हुआ उस समय देश में अनेक वाद प्रचलित थे ! विचार जगत में उथल-पुथल हो रहा था, लोगों की जिज्ञासा जग उठी थी कि परलोक है या नहीं, मृत्यु के बाद जीव का अस्तित्व होता है या नहीं, कर्म है या नहीं ? इस प्रकार के अनेक प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए लोग उत्सुक थे ! ऐसे काल में जब इन दार्शनिक प्रश्नों पर विचार-विमर्श होता था और गृहस्थ भी सत्य की खोज में घर-बार छोड़ कर भिक्षु बन जाते या वनस्थ होते थे, बुद्ध का शाक्य वंश में जन्म हुआ ! इनके बचपन का नाम सिद्धार्थ, कुल क्षत्रिय तथा गोत्र गौतम था ! राजवंश में जन्म लेने के फलस्वरूप इनके जीवन को सुखमय बनाने के लिए पिता ने भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रबंध किये ताकि सिद्धार्थ का मन विश्व की क्षणभंगुरता तथा दुःख की ओर आकर्षित न हो ! पिता के हजार प्रयत्नों के वावजूद सिद्धार्थ का मन संसार की दुखमय अवस्था की ओर जाने से बच न सका ! कहा जाता है कि एक दिन घूमते समय उन्होंने एक रोग ग्रस्त व्यक्ति,एक वृद्ध और श्मशान की ओर ले जाए जाते एक मृतक

शरीर को देखा ! इन दृश्यों का उनके भावुक हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा ! उन्हें समझने में देर न लगी कि संसार दुखों के अधीन है ! संसार की दुखों को किस प्रकार दूर किया जाए यह चिंता निरंतर उन्हें सताने लगी ! दुःख के समधान को ढूंढने के लिए एक दिन वे आधी रात को अपनी पत्नी यशोधरा और नवजात शिशु राहुल को छोड़ कर. राजमहल से निकल पड़े तथा सन्यास को अपनाया ! विभिन्न प्रकार की यातनाएँ झेलने के बाद उन्हें सत्य के दर्शन हुए ! तत्व-ज्ञान अर्थात बोधि प्राप्त कर लेने के बाद वे बुद्ध कहलाए !

सत्य का ज्ञान प्राप्त हो जाने के बाद उन्होंने लोक-कल्याण की भावना से प्रेरित होकर अपने संदेशों को जनता तक पहुँचाने का संकल्प लिया ! उनके उपदेशों के फलस्वरूप बौद्ध दर्शन का विकास हुआ ! बौद्ध धर्म सर्वप्रथम भारत में फैला ! इसके भारत में पनपने का मूल कारण उस समय के प्रचलित धर्म के प्रति लोगों का असंतोष था ! उस समय भारत में ब्राह्मण धर्म का बोल-बाला था, जिसमें बलि प्रथा की प्रधानता थी ! पशु ही नहीं मानवों को भी बलि देने में किसी प्रकार का संकोच नहीं होता था ! हिंसा के इस भयानक वातावरण में विकसित होने के कारण बौद्ध धर्म जो अहिंसा पर आधारित था भारत में लोकप्रिय होने का दावा कर सका ! कुछ ही समय बाद यह विश्व धर्म के रूप में प्रतिष्ठित हुआ ! आगे चलकर इस धर्म के अनुयायियों में मतभेद हो जाने के कारण अनेक शाखाएँ निर्मित हो गयी, जिसके फलस्वरुप उत्तरकालीन बौद्ध दर्शन का जिसमें दार्शनिक विचारों की प्रधानता है, सृजन हुआ ! उत्तरकालीन बौद्ध दर्शन आरंभिक बौद्ध दर्शन से बहुत सी बातों में भिन्न तथा विरोधी विचार रखनेवाला प्रतीत होता है ! महात्मा बुद्ध ने कोई पुस्तक नहीं लिखी, उनके उपदेश मौखिक ही होते थे ! बुद्ध की मृत्यु के बाद उनके शिष्यों ने उनके उपदेशों का संग्रह "त्रिपिटक" में किया ! त्रिपिटक बुद्ध की शिक्षाओं का तीन पिटारियाँ है ! सुतपिटक,अभिधम्म पिटक और विनय पिटक तीन पिटकों के नाम हैं ! बौद्ध दर्शन की प्राचीन पुस्तकों में त्रिपिटक के अतिरिक्त "मिलिन्द पन्हों" भी काफी महत्वपूर्ण है ! महात्मा बुद्ध की मुख्य शिक्षाएँ चार आर्यसत्य है

आचारनीति :- मनुष्य के जीवन और उसके कर्मों में घनिष्ट सम्बन्ध है ! नैतिकता मानव जीवन का महत्वपूर्ण अंग है, इसके बिना उसका जीवन निरर्थक है ! आचारनीति मनुष्य के कर्मों से ही सम्बंधित है ! मानव जीवन का आदर्श बतलाना ही इसका मुख्य लक्ष्य है ! मानव जीवन का चरम लक्ष्य क्या होना चाहिए, उस लक्ष्य का वास्तविक स्वरुप क्या है और उसकी प्राप्ति के मार्ग क्या हैं ? इन सारी समस्याओं की ही इसमें मीमांसा होती है ! हमारे दर्शनविदों ने इस नीति के मार्ग को गहन विचारधारा के सागर में समाकर मोती की भाँति चराचर जगत के लोगों के लिए प्रस्तुत किया है ! अपने वैचारिक विचार के तथ्यों को उजागर किया है ! किसी ने चरम लक्ष्य की प्राप्ति का सफल साधन वेदोक्ति को माना तो किसी ने इससे परे हटकर एक अलग मार्ग प्रशस्त किया !

बौद्ध आचारनीति :- महात्मा बुद्ध द्वारा प्रतिपादित बौद्ध दर्शन भारतीय दर्शन के अवैदिक (नास्तिक) संप्रदाय के अंतर्गत आता है ! जिस समय महात्मा बुद्ध का जन्म हुआ था उस समय मानव तत्वशास्त्र की समस्याओं को सुलझाने में निमग्न था ! प्रत्येक व्यक्ति आत्मा,जगत तथा ईश्वर जैसे विषयों के चिंतन में डूबा हुआ था ! जितने विचारक थे उतने मत हो गए जिसका परिणाम ये हुआ कि लोगों का नैतिक जीवन निष्प्राण हो रहा था ! लोग जीवन के कर्तव्य को भूल रहे थे,वे संसार में रहकर भी संसार से कोसों दूर थे ! आचारनीति के प्रति लोगों की आस्था उठने लगी थी ! जिस प्रकार विचार के क्षेत्र में पूरी अराजकता थी उसी प्रकार नैतिक क्षेत्र में भी अराजकता थी ! उस समय एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो लोगों को नैतिक जीवन की समस्याओं के प्रति जागरूक बनाने में सहायक हो ! महात्मा बुद्ध इस मांग की पूर्ति करने में पूर्ण रूप से सफल हुए ! बुद्ध के अनुसार संसार दुखों से परिपूर्ण है ! उन्होंने दुःख के सम्बन्ध में जितने प्रश्न हैं उनका उत्तर जानने के लिए मानवों को प्रेरित किया ! उन्होंने दर्शन का उद्देश्य दुखों का अंत बताते हुए दुःख की समस्या और दुःख निरोध पर अधिक जोर दिया है ! बौद्ध दर्शन मुख्यतः आचार दर्शन ही है ! बुद्ध की आचारनीति का प्रारम्भ चार आर्य सत्यपरक बोध से होता है ! ये आर्य-सत्य हैं - दुःख है,दुःख का कारण है, दुःख का अंत है तथा दुःख के अंत का उपाय है ! ये चार आर्य-सत्य बौद्ध धर्म के सार हैं !

बुद्ध की समस्त शिक्षाएँ किसी न किसी रूप में इन चार आर्यसत्यों से प्रभावित हुई है ! बुद्ध के अनुसार इसी से अनासक्ति,वासनाओं का नाश,दुखों का अंत,मानसिक शांति,ज्ञान,प्रज्ञा तथा निर्वाण संभव हो सकते हैं ! चार आर्य-सत्यों पर अत्यधिक जोर देना बुद्ध के व्यवहारवाद का प्रमाण कहा जा सकता है ! बौद्ध-आचारनीति के अनुसार इन आर्य-सत्यों के ज्ञान एवं उनके अनुसार आचरण करने से न केवक इस जन्म के दुःख दूर होते हैं बल्कि दुःख की जड़ अर्थात जन्म-मरण की श्रृंखला ही रुक जाती है तथा जीव निर्वाण की प्राप्ति करता है ! महात्मा बुद्ध प्रथम आर्य-सत्य में संसार को दुखमय बताकर दूसरे में दुखों का कारण बताते हैं तथा तीसरे में दुखों के निवारण की सम्भावना बताते हुए चतुर्थ में सर्वजनों के लिए सुलभ एवं व्यावहारिक मार्ग बताते हैं जिसे अष्टांगिक मार्ग कहते है ! इस मार्ग को दुःख-निरोध मार्ग भी कहा जाता है ! यह वह मार्ग है जिसपर चलकर बुद्ध ने निर्वाण को प्राप्त किया था ! बुद्ध का यह चौथा आर्यसत्य उनके धर्म एवं नीतिशास्त्र का आधार-स्वरूप है ! इस मार्ग के आठ अंग इस प्रकार हैं - सम्यक दृष्टि,सम्यक संकल्प,सम्यक वाक्, सम्यक क्रमांत,सम्यक आजीव,सम्यक व्यायाम,सम्यक स्मृति तथा सम्यक समाधि ! बौद्ध-धर्म कोई उपासना धर्म नहीं है ! इस धर्म के अनुसार मनुष्य अपने दुखों को दूर करने के लिए किसी सर्वोच्च सत्ता से दया की आकांक्षा नहीं रख सकता और न ही उससे दुःख निवारण की प्रार्थना ही कर सकता है बल्कि मनुष्य को अपने प्रयत्न से ही दुखों को दूर करना पड़ता है और नैतिकता की मांग भी यही है ! अतः महात्मा बुद्ध के अनुसार दुखों का अंत करने का उपाय एक वैसे चरित्र का निर्माण करना होता है जिसमें सही प्रज्ञा, सही शील तथा सही समाधि निहित हो ! यदि जीवन के लक्ष्य को आध्यात्मिक रूप नहीं भी दिया जाए तो भी सही प्रकार के किसी जीवन आदर्श को चरितार्थ करने के लिए साधन के रूप में सही ज्ञान, सही प्रकार की कार्यक्षमता और सही प्रकार की मानसिक एकनिष्ठता आवश्यक होते ही हैं !

उद्देश्य (OBJECTIVE) :- इस शोध-प्रबंध का मुख्य उद्देश्य बौद्ध-आचारनीति के विशेषताओं पर चर्चा करने के साथ-साथ वर्तमान समय में इसकी प्रसंगिकता की जाँच करना है ! वर्तमान समाज कई प्रकार से मानव-विसंगतियों से दूषित होता जा रहा है ! समाज में हिंसा,प्राणी के प्रति दुर्भावना,जातिवाद,धनलिप्सा एवं संचयन आदि भाव बढ़ता जा रहा है, जो विवेकी मानव के विवेक के महत्व से दूर होता जा रहा है ! अतः सर्वकल्याण की प्रासंगिकता को बनाए रखने हेतु बौद्ध-आचारनीति का अनुसरण करना ज्यादा युक्ति-संगत एवं तर्क-संगत है ! भला मानव में हिंसा का भाव कैसे हो सकता है ? जब विश्व कल्याण की बात हो तो समान गुण-धर्मों वाला मानव अलग कैसे हो सकता है ? जहाँ पर "बसुधैव-कुटुंबकम" की बात किया जा रहा हो वहाँ पर मानव स्पृह जैसे भावना से ग्रसित कैसे हो सकता है ? जहाँ "अतिथिदेवो भव" का भाव हो वहाँ दूसरों को कष्ट देकर उससे उसके भोजन को कैसे छीना जा सकता है ? मानव के इन शाश्वत भावना को अक्षुण्ण बनाए रखने हेतु महात्मा बुद्ध के विचारों की प्रासंगिकता समय की मांग होती जा रही है ! अतः उनके द्वारा बताए गए आचारनीति का पालन कर मानव अपने चरम लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है !

साहित्य की समीक्षा :- 'बौद्ध-दर्शन की आचारनीति का वर्तमान परिपेक्ष्य में प्रासंगिकता' इस विषय पर शोध करने हेतु कई महत्वपूर्ण एवं प्रामाणिक पुस्तकों का अध्ययन किया गया है जो इस दर्शन पर वृहत रूप से प्रकाश डालते हैं ! इस कड़ी में आचार्य नरेन्द्रदेव कृत बौद्ध धर्म-दर्शन, राहुल सांकृत्यायन कृत बौद्ध दर्शन, माध्वाचार्य कृत सर्वदर्शन संग्रह, डॉ. राधाकृष्णन कृत भारतीय दर्शन, एन. के. देवराज कृत भारतीय दर्शन का इतिहास आदि प्रमुख हैं ! सुत्तपिटक,विनयपिटक,अभिधम्म पिटक, धम्मपद के अध्ययन से बौद्ध आचारनीति का ज्ञान हुआ है जिसकी तुलना श्रीमद्भगवद्गीता (व्याख्याकार - डॉ. अखिलेश कुमार) से की गयी है !

परिकल्पना :- चरम उद्देश्य की प्राप्ति जब हमारे जीवन का मूल लक्ष्य है तो इसके लिए किया गया उद्यम जब आचार,व्यवहार एवं आदर्श के कसौटी पर खड़ा उतरे एवं सर्वकल्याण जैसे भाव में लेश मात्र भी व्यवधान न हो तो यह सर्वग्राहय होना चाहिए ! बौद्ध-आचारनीति अत्यंत व्यावहारिक है जो दुखों के सागर से मानव को निकलने के लिए काफी उपयोगी है ! इसमें बताए गए मार्गों पर चलकर मानव चरम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है साथ ही साथ समाज एवं विश्व से हिंसा,जातिवाद,धनलिप्सा जैसे दुर्गुणों को मिटा भी सकता है तथा सर्वकल्याण की भावना को अक्षुण्ण रखा जा सकता है ! यह शोध प्राथमिक एवं द्वितीयक श्रोतों के आधार पर प्रस्तुत होना है ! प्राथमिक श्रोत बौद्ध दर्शन के प्राचीन ग्रंथ होंगे जो उनके शिष्यों द्वारा निर्मित किये गए हैं तथा द्वितीयक श्रोत में बौद्ध दर्शन पर किये गए अध्ययन, शोध-प्रबंध, शोध-पत्र, संदर्भ-पुस्तकों सहित विकिपीडिया एवं अन्य व्यवसाइट सम्मिलित हैं ! हम इन दोनों श्रोतों के आधार पर शोध के निष्कर्ष तक पहुँच सकते हैं !

शोध विधि :- उपर्युक्त विषय पर शोध करने हेतु विभिन्न विधियों का सहारा लेना है जो निम्न है :-

(क) स्वाध्याय विधि - किसी भी विषय के पूर्ण ज्ञान के लिए उससे सम्बंधित प्रामाणिक ग्रंथों को स्वयं पढ़ना तथा स्वयं समझने का प्रयत्न करना ही स्वाध्याय विधि है ! इस विधि का बौद्ध-आचारनीति को समझने में महत्वपूर्ण योगदान होगा !

(ख) विश्लेषणात्मक विधि- यह विधि बौद्ध-आचारनीति का विश्लेषण कर एक-एक खंड को समझने में काफी उपयोगी होगा !

(ग) संश्लेषणात्मक विधि - विश्लेषण के उपरांत सभी खण्डों का एक-दूसरे से सम्बन्ध स्थापित करने में यह विधि सहायता प्रदान करेगी !

(घ) तुलनात्मक विधि - इस विधि के द्वारा ही विभिन्न पक्षों की तुलना की जा सकेगी ताकि निष्कर्ष पर पहुंचा जा सके !

(ङ) आगमनात्मक विधि - इसके द्वारा उदाहरणों के माध्यम से निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकेगा !

(च) निगमनात्मक विधि - इस विधि द्वारा सिद्धांत की परीक्षा उदाहरणों के आधार पर की जाएगी !

(छ) तर्क एवं विचार-विमर्श विधि - यह विधि भी हमारे शोध कार्य में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी !

इसके अलावे आवश्यकतानुसार अन्य विधियों एवं प्रविधियों का भी सहारा लिया जाएगा !

अध्याय योजना :- इस शोध कार्य में छः अध्याय होंगे जो निम्नलिखित हैं :-

(1) बौद्ध-दर्शन का उद्भव एवं विकास !

(2) बौद्ध-दर्शन की आचारनीति

(3) बौद्ध-आचारनीति का अन्य नास्तिक दर्शनों की आचारनीति से तुलना !

(4) बौद्ध-आचारनीति का श्रीमद्भगवद्गीता की आचारनीति से साम्यता !

(5) बौद्ध-आचारनीति का वर्तमान समय में उपयोगिता !

(6) उपसंहार !

संदर्भग्रंथ सूची :-

सुत्तपिटक (हिंदी अनुवाद)

विनयपिटक (हिंदी अनुवाद)

अभिधम्म पिटक (हिंदी अनुवाद)

बौद्ध धर्म-दर्शन :- आचार्य नरेन्द्रदेव

बौद्ध दर्शन :- महापंडित राहुल सांकृत्यायन

सर्वदर्शन संग्रह :- माध्वाचार्य (भाष्यकार-डॉ. उमाशंकर शर्मा "ऋषि")

भारतीय दर्शन का इतिहास- डॉ.एन. के. देवराज

भारतीय दर्शन (भाग -1):- डॉ. राधाकृष्णन

भारतीय दर्शन का इतिहास (भाग-2):- डॉ. सुरेन्द्रनाथ दासगुप्त

बुद्ध और बौद्ध धर्म दर्शन :- डॉ. डी. आर. जाटवा

बौद्ध दर्शन में निर्वाण का स्वरुप : एक मूल्यांकन :- डॉ. अनामिका गुप्ता

बुद्ध जीवन दर्शन :- डॉ. उमाशशी दुर्गा

श्रीमद्भगवद्गीता :- व्याख्याकार - डॉ. अखिलेश कुमार

लोकायत :- डी. पी. चट्टोपाध्याय

प्राचीन भारतीय बौद्ध धर्म : उद्भव, स्वरुप एवं पतन :- के. टी. एस. सराओ

नीतिशास्त्र :- सिद्धांत एवं व्यवहार :- प्रो. नित्यानंद मिश्र

इन पुस्तकों के अलावे अन्य सन्दर्भ-पुस्तकों सहित विकिपीडिया,व्यवसाइट,सम्बंधित शोध-प्रबंध, शोध-पत्रों एवं पत्रिकाओं का भी गहनतापूर्वक अध्ययन किया जाएगा ताकि मेरा शोध उत्कृष्ट एवं मौलिक हो !